आंवले की उन्नत खेती

डॉ. हरि दयाल
विषय विशेषज्ञ (उद्यान)
कृषि विज्ञान केन्द्र,
केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर-342005 (राजस्थान)
संपर्कः फोनः 09784993520
ई मेलः drharidayal@gmail.com

आंवला का फल औषधीय गुणों से भरपूर एवं प्रचुर मात्रा में पोषक तत्वों की मौजूदगी के कारण अमृत फल माना जाता है। इसके 100 ग्राम गूदे में 500-700 मि.ग्रा. विटामिन 'सी' की मात्रा पायी जाती है। इसके अतिरिक्त इसमें कैल्शियम, फॉस्फोरस, पोटेशियम व शर्करा भी प्रचुर मात्रा में पायी जाती है। इसके फलों का गूदा कसैला होने के कारण ताजा फल नहीं खाया जाता है। इसके फलों का उपयोग मुरब्बा, स्कवैश, अचार, कैण्डी, जूस, जेम, आयुर्वेदिक दवाइयां जैसे त्रिफला चूर्ण, च्यवनप्राश, अवलेह, सौन्दर्य सामग्री जैसे आंवला केशतेल, चूर्ण, शैम्पू इत्यादि बनाने में होता है। इसके पौधे बंजर, कम अम्लीय व ऊसर भूमि जिसका पी.एच. 6.5-9.5 हो तथा विनियमशील

सोडियम 30-35 प्रतिशत एवं विद्युत चालकता 9.0 म्होज प्रति से.मी. तक हो, सफलतापूर्वक उगाया जाता है। आंवले के वृक्षारोपण के लिए 2 मीटर गहराई तक मिट्टी होने पर पैदावार अच्छी मिलती है। यह रेतीली दोमट उपजाऊ भूमि में भली-भांति फलता है।

उन्नत किस्में:

आंवला की फलन व फलों के अनुसार निम्नलिखित उन्नत प्रजातियां है-

1. बनारसी आंवला:- यह जल्दी तैयार होने वाली किस्म है। इसके फल बड़े आकार के तथा पारदर्शक होते है। लेकिन मादा पुष्पों की संख्या कम होने के कारण फलन कम होता है तथा अधिक फल गिर जाते हैं। इसकी भण्डारण क्षमता भी कम होती है। इसमें गूदा रेशा रहित होता हैं

2. कंचन (एन.ए. 4):- यह किस्म चकैया से चयनित करके निकाली गयी है, जो मध्यम किस्म है। मादा पुष्पों की संख्या 4.7 प्रतिशत प्रति शाखा, मध्यम आकार के फल, गोल, हल्के पीले रंग के अधिक गूदा युक्त होते हैं। गूदा रेशायुक्त होने के कारण यह प्रजाति गूदा निकालने हेतु एवं अन्य परिरक्षित उत्पाद बनाने हेतु औद्योगिक इकाइयों द्वारा अधिक पसन्द की जाती है। इसके फलों का परिपक्व समय मध्य नवम्बर से मध्य दिसम्बर होता है। यह महाराष्ट्र व गुजरात के शुष्क व अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में अधिक उगायी जाती है।

3. कृष्णा (एन. ए. 5):- यह बनारसी किस्म से चयनित करके निकाली गयी, एक अगेती किस्म है। इसके फल बड़े आकार के, ऊपर से तिकोने, फल की सतह चिकनी, सफेद हरी से हल्की पीली तथा लाल धब्बेदार होती है। फल का गूदा हल्के गुलाबी रंग का कम रेशायुक्त तथा अत्यधिक कसैलापन लिए होता है। फल मध्यम भण्डारण क्षमता वाले होते हैं। अपेक्षाकृत अधिक मादा पुष्प के कारण इसकी उत्पादन क्षमता बनारसी किस्म के पेड़ों से अधिक होती है। इसके फल मध्य अक्टूबर से मध्य नवम्बर तक पकते हैं। इस किस्म के फल मुरब्बा, कैण्डी व जूस बनाने के लिए अधिक उपयुक्त हैं।

4. नरेन्द्र आंवला-6 (एन. ए. 6):- यह किस्म चकैया किस्म से चयनित करके निकाली गयी है जो कि मध्यम किस्म है। इस किस्म के वृक्षों का फैलाव अधिक, फलों का आकार मध्यम से बड़ा, गोल, सतह चिकनी, हरी पीली चमकदार, आकर्षक, गूदा लगभग रेशारहित एवं मुलायम होता है। इसके फल मध्य नवम्बर से मध्य दिसम्बर तक पकते है। इस किस्म के फलों से मुरब्बा, जेम व कैण्डी बनायी जाती हैं।

5. नरेन्द्र आंवला -7 (एन. ए. 7):- यह किस्म फ्रांसिस (हाथीझूल) के बीजू पौधे से चयनित करके निकाली गयी है जो जल्दी पकने वाली मध्यम किस्म है। यह नियमित एवं अधिक फलने वाली, मादा पुष्पों की संख्या 9.7 (औसतन) तथा फल पकने का समय मध्य नवम्बर से मध्य दिसम्बर तक, ऊतक क्षय रोग से मुक्त, फल मध्यम से बड़े आकार के, ऊपर तिकोने, चिकनी सतह, हल्के नीले रंग के होते है। गूदे में रेशे की मात्रा एन.ए. 6 से अधिक होती है। अधिक फल लगने के कारण शाखाएं टूट जाती है। यह किस्म राजस्थान, बिहार, मध्यप्रदेश तथा तमिलनाडू में अधिक उगाई जाती है।

6. नरेन्द्र आंवला-10 (एन. ए. 10):- यह बनारसी किस्म के बीजू पौधे से चयनित करके निकाली गई है जो अधिक फल देने वाली होती है। फल देखने में आकर्षक, मध्यम बड़े आकार के, चपटे गोल, सतह कम चिकनी, हल्के पीले रंग वाली, गुलाबी रंग लिए होती है। फलों का गूदा सफेद हरा व रेशे की मात्रा अधिक होती है।

इसके अलावा आनंद-1, आनंद-2 व आनंद-3 गुजरात से निकाली गयी हैं।

रेखांकन करना व वृक्षारोपण:

रबी की फसल कटने के बाद ही आंवले का वृक्षारोपण करने के लिए जगह का चयन करना चाहिये। आंवले के पेड़ बड़े होने कारण 8-10 मीटर की दूरी पर लगाते है। जिसमें पौधे से पौधे की दूरी व कतार से कतार की दूरी दोनों ही 8-10 मीटर रखते है। गर्मीयों के दिनों में 1 मीटर (लंबा) x 1 मीटर (चौड़ा) x 1 मीटर (गहरा) आकार के गड्ढे खोदकर खुला छोड़ देते हैं। जिससे उसमें धूप का प्रवेश भली भांति हो सके तथा हानिकारक कीटाणु भी धूप एवं चिड़ियों द्वारा नष्ट हो जायें। गड्ढे में पुनः दो भाग मिट्टी, एक भाग गोबर या मींगणी की सड़ी खाद का मिश्रण बनाकर भर देते हैं और उसमें पानी भर देते है। मौसम के आने पर गड्ढे के बीचोबीच में पौधों की रोपाई कर देते है।

खाद एवं उर्वरक:

आंवले का अच्छा उत्पादन लेने के लिये खाद व पोषक तत्व देना अति आवश्यक है। खाद व उर्वरक पौधों की आयु के अनुसार देते है।

सारणी-1: आंवले के पौधों में दी जाने वाली पोषक तत्वों की मात्रा

पौधों की आयु (वर्षों में)	गोबर की खाद (किग्रा प्रति पौधा प्रति वर्ष)	नत्रजन (ग्राम)	फॉस्फोरस (ग्राम)	पोटेशियम (ग्राम)
1	5	100	50	100
2	10	200	100	200
3	15	300	150	300
4	20	400	200	400
5	25	500	250	500
6	30	600	300	600
7	40	700	350	700
8	45	800	400	800
9	50	900	450	900
10 या अधिक	55	1000	500	1000

गोबर की खाद की सम्पूर्ण मात्रा, नत्रजन की आधी मात्रा, फॉस्फोरस व पोटेशियम की सम्पूर्ण मात्रा फूल आने से पहले जनवरी व फरवरी महीने में तथा शेष नत्रजन की मात्रा जुलाई-अगस्त में देते हैं।

सिंचाई:

आंवले में कम पानी की आवश्यकता होती है। फिर भी पहली सिंचाई जनवरी-फरवरी के महीने में जब खाद डालते हैं, उस समय अवश्य करनी चाहिये। फूल आने के समय मध्य मार्च से मध्य अप्रैल तक सिंचाई नहीं करनी चाहिये।

आंवला में कीट-व्याधि की समास्या व उनकी रोकथाम:

प्रमुख कीट व रोकथाम

उदई आंवले के पौधों की स्थापना में दीमक का प्रकोप एक गंभीर समस्या है। जडों एवं तनों में अत्यधिक प्रकोप होता है जिससे पौधे सूख जाते हैं। सडे हुए गोबर को ही पौधों में डालना चाहिए। 50 ग्राम कार्बोनिल चूर्ण व थिमेट का भुरकाव गड्डे भरने से पहले अवश्य करना चाहिए। खड़ी फसल में क्लोरपाइरीफॉस 2 मिली/ली. घोल का प्रयोग करना चाहिए।

आंवले में मुख्यतः शूट गॉल तथा छाल भक्षक कीटों का प्रकोप पाया जाता है। शूटगॉल कीट के प्रकोप से शाखाओं के शीर्ष भाग पर गांठें बन जाती हैं जबकि छाल भक्षक कीट शाखायों में सुरंग बनाते हैं। जिससे शाखायें सूखने लगती हैं।

आंवले में शूटगॉल कीट के नियन्त्रण के लिए मोनोक्रोटोफॉस 36 एस.एल. कीट नाशक दवा की एक मिलीलीटर मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर पौधों पर छिडकाव करें । छाल भक्षक कीट के नियन्त्रण के लिए प्रति सुरंग में केरोसीन की 3 से 5 मिलीलीटर मात्रा सिरिंज की सहायता से सुराख में डालकर गीली मिट्टी से बन्द कर दें।

प्रमुख रोग व रोकथाम

आंवले के पौधों में रोगों का प्रकोप बहुत कम पाया जाता है । कभी कभी रोली रोग का प्रकोप आंवले के पौधों पर दिखायी देता है रोली रोग में पत्तियों एव फलों पर काले रंग के धब्बे पड जाते हैं। रोली रोग की रोकथाम के लिए घुलनशील गन्धक की 2 ग्राम मात्रा या बेलीटोन दवा की 1 ग्राम मात्रा में प्रति लीटर पानी में घोलकर पौधों पर छिडकाव करें ।

परिपक्वता:

आंवले में परिपक्वता निर्धारण करने का सबसे अच्छा तरीका फलों में रंग परिवर्तन होना है। फलों का हरा रंग जब चमकदार सफेद हरा या पीला हरा हो तब ये फल परिपक्व हो जाते हैं। बनारसी व कृष्णा किस्मों में परिपक्वता फल लगने के 18-20 सप्ताह बाद, चकैया में फल लगने के 23 सप्ताह बाद तथा कंचन व फ्रांसिस किस्मों में परिपक्वता फल लगने के 20 सप्ताह बाद आती है।

कृषि EXPERT

तुड़ाई:

फलों की परिपक्वता पर तुड़ाई करना अति आवश्यक है। बनारसी व फ्रांसिस किस्मों में तुड़ाई में विलम्ब करने पर अगली फसल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

श्रेणीकरण:

फलों का श्रेणीकरण करके बेचने पर अच्छी आय प्राप्त होती है। फलों का आकार, भार, रंग एवं पकने के समय के अनुसार श्रेणीकरण किया जाता है। बड़े आकार के फल (4 सेमी व्यास के) के आकार के फलों का उपयोग मुरब्बा बनाने के लिए, मध्यम आकार के फलों का उपयोग परिरक्षित उत्पाद बनाने के लिये तथा छोटे आकार के फलों का उपयोग औषधीय उत्पाद जैसे च्यवनप्राश, त्रिफला चूर्ण, प्रसाधन सामग्री जैसे आंवला केशतेल, चूर्ण, शैम्पू इत्यादि बनाने के लिये किया जाता है।

उपज:

आंवले के पौधे से औसतन 1.5 से 2 क्विंटल फल प्रति वृक्ष प्राप्त हो जाते है।

भण्डारण:

आंवले के फलों का भण्डारण 6-9 दिनों तक सामान्य तापक्रम पर, शीतगृह में 5-7° सेन्टीग्रेड तापक्रम पर 15 दिनों तक तथा फलों को 15 प्रतिशत नमक के घोल में रखकर 75 दिनों तक सामान्य तापक्रम पर भण्डारित किया जा सकता है।

इस प्रकार आम कास्तकार उन्नत ढंग से आंवले की खेती कम पानी में अपनाकर अधिक आय व मुनाफा ले सकते है और खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकते है।

==